देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का पहला हुक्म यानी तौबा करना और ईमान लाना

हज़रत ईसा अल-मसीह का पहला हुक्म यानी तौबा करना और ईमान लाना

हज़रत ईसा अल-मसीह की राह पर चलने का पहला क़दम है तौबा करना और ईमान लाना।

जब हज़रत याहया (अलैहिस्सलाम) ने अपनी ख़िदमत शुरू की, तो उन्होंने फरमाया:
"तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है।"

इस पैग़ाम में उन्होंने ऐलान किया कि हज़रत ईसा अल-मसीह ही आसमान के बादशाह हैं, जो दुनिया में आए। इसलिए हर शख़्स को चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी उन्हीं को सौंप दे।

जब हज़रत ईसा अल-मसीह ने अपनी ख़िदमत शुरू की, तो उन्होंने भी यही पैग़ाम सुनाया:
"तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है।"

आज भी जब हम हज़रत ईसा अल-मसीह का पैग़ाम सुनते हैं, तो हमें तौबा करनी चाहिए और अपनी ज़िन्दगी अल्लाह को सौंपनी चाहिए।

याद रखें, तौबा करना और ईमान लाना अलग नहीं हो सकते। तौबा करना का मतलब है पुरानी ग़लत राह छोड़ देना। ईमान लाने का मतलब है हज़रत ईसा अल-मसीह की तरफ़ मुड़ना और उन पर मुकम्मल भरोसा करना। वही इबादत के लायक़ हैं। वही हैं जिन्होंने हमारे गुनाहों के लिए सूली पर अपनी जान दी। वही हैं जो क़ब्र से ज़िन्दा हुए। वही हैं जो क़यामत के दिन पूरी दुनिया का हिसाब लेंगे।

आइये अब हम इन वाकिये को इंजील शरीफ़ में (लूका 19) को पढेंगे।

फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और उसमें से गुज़रने लगा।

उस शहर में एक अमीर आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो टैक्स लेनेवालों का अफ़सर था।

वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावुजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था और ज़क्काई का क़द छोटा था।

इसलिए वह दौड़कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तूत के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था।

जब ईसा वहाँ पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा, "ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।"

ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से उस की मेहमान-नवाज़ी की।

यह देखकर बाक़ी तमाम लोग बुड़बुड़ाने लगे, "इसके घर में जाकर वह एक गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।"

www.taleemulkalam.org

लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावंद के सामने खड़े होकर कहा, "ख़ुदावंद, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।"

ईसा ने उससे कहा, "आज इस घराने को नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा है।

क्योंकि इब्ने-आदम गुमशुदा को ढूँडने और नजात देने के लिए आया है।"

मेरे अज़ीज़ो, इस वाक़िये के तीन हिस्से हैं:

ज़कई गुनाहगार था – वह लालची था और लोगों से ज़्यादा पैसा लेता था। हज़रत ईसा ने उससे मोहब्बत की – उन्होंने उसका नाम लेकर बुलाया और उसके घर गए। ज़कई ने तौबा की और ईमान लाया – उसने अपनी दौलत का बड़ा हिस्सा ग़रीबों को देने और नाइंसाफी से लिया हुआ चार गुना लौटाने का वादा किया।

सोचिए, एक लालची आदमी कैसे इतना दरियादिल हो गया? यह हज़रत ईसा अल-मसीह की ताक़त है। इसी तरह हमें भी करना है। जब हम हज़रत ईसा की राह पर चलना चाहते हैं, तो हमें अपने पुराने गुनाह छोड़कर उनकी तरफ़ मुड़ना होगा।

गुनाह कई तरह के होते हैं – लालच, झूठ, चोरी, शराब, ज़िना यानी बदकारी, ग़ुस्सा, ज़ुल्म। ज़कई लालच का शिकार था।

आप किस गुनाह में फँसे हैं?

जैसे ज़कई ने अपनी ग़लत राह छोड़कर हज़रत ईसा अल-मसीह की राह पकड़ी, वैसे ही आज आपको भी तौबा करनी चाहिए और ईमान लाना चाहिए।

उम्मीद है कि आप तौबा करके ईमान ले आयें होंगें।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....